प्राचीन भारतीय षासन व्यवस्था में कोश का महत्व एवं इसकी वृद्धि के उपाय : एक अध्ययन

डा0 आतिफ हुसैन रिजवी
राजनीतिषास्त्र विभाग
सेठ फूलचन्द बागला महाविद्यालय,
हाथरस–204101

सारांष :– प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारकों ने कोश को राज्य के सात अंगों में एक माना है। विचारकों के मतानुसार राज्य के कोश से सेना एवं प्रजा की रक्षा होती है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में भी धन के महत्व का वर्णन देखने को मिलता है तथा जो राज्य धन एवं सम्पदा से भरपूर होता है उसे सर्वत्र आदर प्राप्त होता है। अतः प्राचीन विचारकों ने राजा को अपने राज्य में कोश संचय करने के लिये कहा है तथा कोश को राज्य की समृद्धि के लिये आवष्यक माना है।

मुख्य षब्दः– कोश, कोश वृद्धि, राश्ट, धन समृद्धि इत्यादि

प्रस्तावनाः– प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारकों ने कोश को राज्य के सात अंगों में एक अंग माना है। महाभारत में आत्मा, अमात्य, कोश, दण्ड, मित्र, जनपद तथा पुर आदि राज्य के सात अंगों का उल्लेख उपलब्ध होता है।[1] आचार्य षुक्र ने इन सात अंगों की मनुश्य की षरीर से तुलना करते हुए मुख के समान माना है।[2] जिस प्रकार हमारे षरीर का मुख आवष्यक अंग है उसी प्रकार राज्य के प्रमुख अंगों में कोश को महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। प्राचीन विचारकों ने राश्ट्र वृद्धि के लिये कोश को आवष्यक माना है। आचार्य षुक्र ने राज्य के सात अंगों (राजा, मंत्री, मित्र, कोश, राश्ट्र, दुर्ग तथा सेना) में कोश को चौथा स्थान प्रदान किया है।

कोश का महत्वः– भारतीय राजनीतिक विचारकों में सोमदेव सूरि ने कोश का उल्लेख करते हुए कहा है जो दुख और सुख के समय में स्वामी के सैन्य बल को समृद्ध कर सकता है वह कोश है।[3] उत्तम कोश की व्याख्या करते हुए वह कहते हैं कि ऐसा कोश जिसमें सोना चॉदी अधिक हो तथा जो आपातकाल व समय पड़ने पर व्यय किया जा सके। उत्तम कोश कहलाता है। कोश को महत्वपूर्ण बताते हुए वह कहते हैं कि राजाओं के जीवन हेतु उसका कोश होता है, प्राण नहीं।[4] इस प्रकार आचार्य

सोमदेव प्राण की तुलना में कोश को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उन्होंने कोश को ही जीवन माना है। दिव्यावदान[5] में कोश को राजा की षक्ति बताया है। कोश की महिमा का वर्णन करते हुए आचार्य सोमदेव सूरि कहते हैं कि निर्धन पुरूश की कोई सेवा नही करता है धनहीन व्यक्ति को उसकी स्त्री भी त्याग देती है।[6] तथा जिस पुरूश के पास पर्याप्त धन होता है वह व्यक्ति कुलीन समझा जाता है। इस प्रकार भारतीय विचारकों ने कोश के महत्व का वर्णन करते हुए विभिन्न विचार प्रस्तुत किये हैं।

कोश वृद्धि के उपाय– प्राचीन राजनीतिक विचारक कोश वृद्धि एवं कोश के महत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं कि राजा का कर्तव्य है कि कोड़ी–कोड़ी जोड़कर वह कोश की वृद्धि करे ऐसा न करने पर उसका विनाष सम्भव है।[7] उन्होंने कोश को राजा की प्रभुषक्ति माना है। सोमदेव कहते हैं कि राजा का कर्तव्य है कि वह अपने–अपने राज्य में कोश वृद्धि के लिये सभी सम्भव उपाय करे। उन्होंने मूलधन से अधिक लाभ लेने वाले व्यापारी के बढ़े हुए धन को जप्त करके राजकोश की वृद्धि करने के लिये राजा से कहा है।[8] उनके मतानुसार प्रजा आर्थिक रूप से समृद्ध होनी चाहिए क्यों कि आर्थिक रूप से समृद्ध प्रजा से कोश वृद्धि के लिये धन आदि की सहायता ली जा सकती है। सोमदेव ने षुल्क स्थान को कामधेनु के तुल्य माना है।[9]

इन स्थानों से षुल्क ग्रहण करने से राज्य की कोश वृद्धि होती है। उनके मतानुसार पषु, अन्न तथा सुवर्ण की वृद्धि से ही कोश की वृद्धि होती है।[10] राज्य में पर्याप्त धान्यों का होना सेना एवं कोश वृद्धि के लिये आवष्यक है। उनके मतानुसार औशधि, धातु, यत्र, अस्त्र, बर्तन, वस्त्र का संग्रह करना राजा के लिये उचित होता है।

उपसंहार– इस प्रकार प्राचीन युग में कोश का महत्व एवं इसकी वृद्धि के विभिन्न उपाय देखने को मिलते हैं। इस युग में कोश को राजाओं का जीवन के रूप में स्वीकार किया गया है तथा कोश को राश्ट्र वृद्धि के लिये आवष्यक माना है। इस युग में कोश संचय करने के विभिन्न उपायों का वर्णन किया गया है। तथा जिस राज्य में पर्याप्त कोश न हो वह उस राज्य की उन्नति के सभी मार्ग बन्द हो जाते हैं। इस प्रकार यह निश्कर्श निकलता है कि राज्य की समृद्धि के लिये कोश आवष्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. महाभारत, षांतिपर्व 69, 64–65
2. षुक्रनीति अध्याय–1 ष्लोक 62, पृ010
3. नीतिवाक्यामृतम् समदेष 21 ष्लोक–1, पृ0 108
4. नीतिवाक्यामृतम् ष्लोक–7, पृ0 109
5. दिव्यावदान पृ0 429–430
6. नीतिवाक्यामृतम् ष्लोक–9, पृ0 109
7. वही ष्लोक–4, पृ0 109
8. वही ष्लोक–64, पृ0 101
9. वही ष्लोक–21, पृ0 105
10. वही ष्लोक–1, पृ 102